विचार बिन्दु

अतिथि जिसका अन्न खाता है, उसके पाप धुल जाते हैं। -अथर्ववेद

आभार राष्ट्रपति जी, आम नागरिक की पीड़ा व्यक्त करने के लिए

संविधान दिवस 26 नवंबर 2022 को भारत के सर्वोच्च न्यायालय द्वारा आयोजित समारोह में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का उद्बोधन दिल को छू लेने वाला था। शायद पहली बार राष्ट्रपति ने लिखित भाषण नहीं दिया। जिस प्रकार उन्होंने अपने मन के विचार व्यक्त किए, वैसा सामान्यतया राष्ट्रपति द्वारा कभी नहीं किया गया। उनका उद्बोधन कितना प्रभावी था वह इसी से स्पष्ट होता है कि सभी प्रबुद्ध श्रोताओं, जिनमें सर्वोच्च न्यायालय एवं उच्च न्यायालयों के न्यायाधीश सम्मिलित थे, ने उद्बोधन समाप्त होने के बाद खडे होकर काफी देर तालियां बजाकर राष्ट्रपति का अभिनंदन किया। उन्होंने न तो किसी प्रकार की उच्च साहित्यिक भाषा का अपने उद्बोधन में प्रयोग किया एवं न ही केवल सिद्धांतों का प्रतिपादन किया। उन्होंने, केवल उनके द्वार स्वयं अपने जीवन में देखा यथार्थ लोगों के सम्मुख रखा। यह यथार्थ वही था, जिसे देश का आम नागरिक दिन प्रतिदिन अपने जीवन में अनुभव करता है।

उन्होंने अपने उद्बोधन में एक विशेष उदाहरण का उल्लेख किया और बताया कि भारतीय जेलों में वर्षों तक मुकदमों के विचाराधीन रहने के कारण जेलों में बंद कैदियों में से 80 प्रतिशत ऐसे हैं, जिन्हें किसी प्रकार की कोई सजा नहीं हुई है एवं जिनके प्रकरण विचाराधीन हैं। इनके जेल में बंद रहने का प्रमुख कारण यह है कि इनकी जमानत उनके परिवार वाले इसलिए नहीं कराते हैं क्योंकि जमानत हेतु अदालती कार्रवाई पर और वकीलों को जितनी राशि देनी पडती है, उससे उनके घर-बार, यहां तक कि खाना बनाने के बर्तन तक बिक जाने का अंदेशा रहता है। इसका परिणाम यह होता है कि छोटे-छोटे अपराध में, एवं कई बार बिना अपराध के केवल पुलिस की जोर जबरदस्ती के कारण गरीब लोगों को, विशेषकर आदिवासी एवं दलितों को पुलिस द्वारा पकड़ कर जेल में बंद कर दिया जाता है। उनके मुकदमे की सुनवाई लंबे समय तक कई बार प्रारंभ तक नहीं हो पाती। उन्होंने यह उदाहरण इस परिप्रेक्ष्य में दिया कि सरकार द्वारा अतिरिक्त जेल बनाने के प्रस्ताव पर विचार किया जा रहा है। राष्ट्रपति ने दुख मिश्रित आश्चर्य व्यक्त किया कि हम किस प्रकार का विकास कर रहे हैं, कि देश में अधिक जेलों की आवश्यकता हो रही है। होना तो यह चाहिए कि प्रगति के साथ अपराध कम हों ताकि लोगों को जेलों में भेजने की आवश्यकता ही ना पडे। उन्होंने बडे मार्मिक अंदाज में हमें यह बताया कि गांव के लोग अध्यापक, वकील और डॉक्टर को भगवान का दर्जा देते हैं। हम देखते हैं कि यही 'भगवान', आम व्यक्ति के साथ किस प्रकार का व्यवहार करते हैं? राष्ट्रपति द्वारा साझा किए गए अनुभव से हम सभी अवगत हैं किंतु यह बात जब राष्ट्रपति के द्वारा स्वयं किसी सार्वजनिक मंच से कही जाती है तो यह अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। राष्ट्रपति, आदिवासी परिवार से आती हैं और उन्होंने अपने जीवन में जो देखा, उसे सीधी-सादी भाषा में व्यक्त किया है। राष्ट्रपति ने अंत में यह भी कहा कि उन्होंने जो कहा,उसे सब समझें और जो नहीं कहा उसे भी समझें। उनका संकेत बिल्कुल स्पष्ट है कि सरकार के सभी घटकों को इस गंभीर समस्या पर विचार करके गरीबों को न्याय प्रदान करने की प्रक्रिया मैं बहुत सुधार pt करने की आवश्यकता है।

वर्तमान स्थिति में तो न्याय वही प्राप्त कर सकता है जिसके पास सत्ता का संरक्षण हो या धन की ताकत हो, जिनके बल पर वह अच्छे से अच्छा वकील कर सकता है और उसके आधार पर जमानत शीघ्र ही लेने में सफल हो जाता है।

राजनीतिक प्रभाव से किस प्रकार गम्भीर आपराधिक प्रकरण वापस लिए जाते हैं, इसके उदाहरण हमने कई राज्यों में देखे हैं। जब अपराधिक प्रकरण में सरकार के निर्णय से मुकदमे वापस लिए जा सकते हैं, तो कम से कम इतना तो किया ही जा सकता है कि जो गरीब, छोटे-छोटे अपराधों में जेलों में बंद हैं, उनके प्रकरणों का शीघ्र निस्तारण किया जाए। जब तक निर्णय न हो तो उन्हें ज़मानत देकर अपने घर में परिवार के साथ तो रहने दिया जाए। गरीब, असहाय व्यक्ति जब जेलों में बंद होते हैं, तो केवल वही कष्ट नहीं भोगते हैं, इसका खामियाजा उसके परिवार जनों को भी भुगतना पडता है। उनके लिए जीवन यापन भी कठिन हो जाता है क्योंकि परिवार का मुखिया ही जेल में बंद है। राष्ट्रपति ने अपने उद्बोधन में कहा कि एक ओर जहां गंभीर अपराधी, जमानत प्राप्त करके खुले घूमते हैं, वहीं दूसरी ओर केवल थप्पड मारने वाले व्यक्ति को अनेक वर्षों तक जेल में बंद रहना पडता है।

राष्ट्रपति ने दुख मिश्रित आश्चर्य व्यक्त किया कि हम किस प्रकार का विकास कर रहे हैं, कि देश में अधिक जेलों की आवश्यकता हो रही है। होना तो यह चाहिए कि प्रगति के साथ अपराध कम हों ताकि लोगों को जेलों में भेजने की आवश्यकता ही ना पड़े। उन्होंने बड़े मार्मिक अंदाज में हमें यह बताया कि गांव के लोग अध्यापक, वकील और डॉक्टर को भगवान का दर्जा देते हैं। हम देखते हैं कि यही 'भगवान', आम व्यक्ति के साथ किस प्रकार का व्यवहार करते हैं ?

आम व्यक्ति के साथ सरकार का इस प्रकार का व्यवहार हम प्रत्येक क्षेत्र में देखते हैं। किस प्रकार से सरकारी तंत्र और विभाग आम व्यक्ति की समस्या से बेखबर रहते हैं, इसका एक उदाहरण मुझे हाल ही में देखने का मिला। मैं अपनी परिचित महिला को जयपुर के दुर्गापुरा स्टेशन पर लेने के लिए गया, क्योंकि वह अकेली आ रही थीं। ऑनलाइन जानकारी के अनुसार ट्रेन को प्लेटफॉर्म नंबर 1 पर आना था। जब मैंने दुर्गापुरा रेलवे स्टेशन पहुंच कर उनसे संपर्क किया तो वहां पर अचानक पता लगा कि ट्रेन प्लेटफार्म नंबर 2 पर आई है। हम लोग प्लेटफार्म नंबर एक पर थे। उनके लिए बाहर निकलने के लिए कोई रास्ता नहीं था सिवाय इसके कि वे ओवर ब्रिज पार करके प्लेटफॉर्म नंबर 1 पर आएँ। समस्या यह थी कि उनके पास दो अटैचियां थीं और ओवरब्रिज की सीढ़ियां एकदम खडी और बहुत अधिक थीं। किसी भी साधारण महिला के लिए उसे पार करना दुष्कर कार्य था यदि कोई प्रयास करे भी तो उसे दुर्घटनाग्रस्त होने का खतरा तो था ही। यह तो गनीमत थी कि किसी साथी सहयात्री ने उनकी कुछ सहायता की और वे जैसे तैसे बड़ी मुश्किल से प्लेटफॉर्म नंबर 1 पर आ पाईं। एक प्लेटफॉर्म से दूसरे प्लेटफॉर्म पर जाने के लिए स्वचालित सीढियां (escalator) थीं अवश्य, किन्तु एस्केलेटर खराब पड़ा था। एक ओर जहां बहुत बड़ी धनराशि खर्च करके हम बुलेट ट्रेन जैसी तेज और वंदे भारत जैसी आरामदायक व आधुनिक ट्रेन बना रहे हैं और विश्वस्तरीय स्टेशन बनाने की बात कर रहे हैं, वहीं एक छोटे स्टेशन पर एस्केलेटर तक को सही प्रकार से संचालित - संधारित नहीं कर सकते। इसके कारण यात्रियों को कितनी परेशानी होती है, इसका अंदाजा वही लगा सकता है जो इस प्रक्रिया से गुजरता है।

किसी अन्य राज्य के व्यक्ति के परिवार का राजस्थान में आकर रहने पर यदि वह अपने बच्चों का प्रवेश स्कूल में कराना चाहे तो यह बिना टी सी के सम्भव नहीं है। साधारण परिवारों के जो बच्चे निजी विद्यालयों में पढ़ते थे, उन्हें अब कोरोना के कारण आर्थिक स्थिति खराब होने से राजकीय विद्यालयों में प्रवेश कराने की प्रवृत्ति बढ़ी है। इनसे भी टी सी मांगी जाती है। शिक्षा निदेशालय ने इस बात की परवाह नहीं की कि, टी सी की अनिवार्यता रखने के कारण अभिभावकों को विशेषकर निर्धन अभिभावकों को कितनी समस्या का अनुभव करना पड़ा है? उन्हें निजी विद्यालय टी सी तब तक नहीं देंगे जब तक उन्हें बकाया फीस नहीं मिल जाती। इस अवधि में न तो पढ़ाई हुई न शिक्षकों को वेतन दिया गया। क्या सरकार इस प्रकार से निजी विद्यालयों की सहायता गरीब विद्यार्थियों की कीमत पर नहीं कर रही है? यह, वैसे भी 'शिक्षा के अधिकार' कानून के प्रावधान के विपरीत है। किसी भी 14 वर्ष तक के बच्चे को विद्यालय में आयु के आधार पर कक्षा में प्रवेश दिया जाना अनिवार्य है एवं यह दायित्व विद्यालय का है कि वह बालक-बालिका को संबंधित कक्षा के शैक्षिक स्तर तक लेकर आए।

इसी प्रकार सरकार ने राशन का वितरण बायोमेट्रिक प्रणाली से करने के बाद यह दावा किया कि इससे अब गलत व्यक्ति राशन नहीं ले पाएंगे और सरकार को बहुत बचत होगी। इसका परिणाम यह हुआ कि कई स्थानों पर राशन विक्रेताओं ने बायोमेट्रिक आधार पर राशन देना प्रारंभ किया। जो अत्यंत गरीब व्यक्ति थे, उनके बायोमेट्रिक निशान का मिलान नहीं होने के कारण उन्हें राशन से वंचित रख दिया गया जो निर्धन व्यक्ति दिन भर मजदूरी का काम करते हैं उनके अंगूठे के निशान भी समय के साथ साथ बदल जाते हैं। इस व्यवस्था के कारण उनको सस्ते राशन से भी वंचित रहना पड़ता है। इस से सर्वाधिक नुकसान समाज के सर्वाधिक वंचित वर्ग को हुआ। और जो सबसे गरीब थे उनमें से कई का आधार कार्ड नहीं बन पाया। वे तो वैसे ही इस प्रणाली से राशन प्राप्त करने के पात्र नहीं रहे। क्या हमारी योजनाएं ऐसी होनी चाहिएं जिनसे सबसे गरीब व्यक्ति सबसे अधिक प्रताड़ित अनुभव करें। जो व्यक्ति सक्षम हैं, वे तो येन केन प्रकारेण अपने लिए व्यवस्था कर ही लेते हैं। समस्या तो उन्हीं की है जिस प्रकार के लोगों का जिक्र राष्ट्रपति जी ने अपने उद्बोधन में किया।

हम इस बात पर गर्व अनुभव कर सकते हैं और ऐसा कराया भी जाता है कि भारत को G-20 की अध्यक्षता मिल गई है, भारत विश्व की सबसे तेज गति से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था है, भारत विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। इन सबसे दलित, आदिवासी परिवार के व्यक्ति को अथवा महिला को क्या लाभ मिलता है, जो जैसे तैसे मजदूरी करके अपने परिवार का पालन पोषण करती हैं। हमारे नीति- निर्धारकों को राष्ट्रपति की भावना को समझना चाहिए कि देश सबके लिए बराबर है। देश का कानून सबके लिए बराबर होना चाहिए और जो जितना कमजोर है, उसका साथ सरकार को अधिकाधिक देना चाहिए।

गरीब किसान 2- 3000 रुपये का कर्जा नहीं चुका पाए तो, उसका खेत नीलाम कर दिया जाता है। दूसरी ओर, माल्या तथा नीरव मोदी जैसे लोग बैंकों से हजारों करोड़ का कर्जा लेकर नहीं चुकाने के बाद भी विदेश जाकर ऐशो-आराम की जिंदगी गुजार रहे होते हैं। यदि ऋण न चुकाने पर सजा भुगतनी है, तो फिर वह सबके लिए समान होनी चाहिए। अपने धन एवं संपर्क के बल पर कोई व्यक्ति यहां की वित्तीय संस्थाओं को धता बताकर बिना किसी कार्रवाई के विदेश चला जाए और गांव का गरीब किसान अपने घर-बार को नीलाम करा के जेल चला जाए, यह कैसी व्यवस्था है? कानून का हथोड़ा चलना ही है तो सब पर चले, केवल गरीब पर नहीं।

स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव में राष्ट्रपति जी के द्वारा कही गई बात को न केवल न्यायपालिका, वकील, चिकित्सक और शिक्षा व्यवसाय में लगे लोगों को समझना चाहिए अपितु सरकार के विभिन्न अंगों को भी उनकी भावना के अनुसार अपने व्यवहार और कार्य पद्धति को बदलने का प्रयास करना चाहिये। ऐसा हो पाया, तब ही हम कह पाएंगे कि भारत 140 करोड़ लोगों का मजबूत, समर्थ देश है जहां गरीबों, दलितों, आदिवासियों, अल्पसंख्यकों को भी आगे बढ़ने का पर्याप्त अवसर मिलता है।

माननीय राष्ट्रपति महोदया को वंचित वर्ग की पीड़ा को सार्वजनिक मंच पर दिल से रखने हेतु धन्यवाद।

-अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

(6 दिसंबर - डॉ.अंबेडकर निर्वाण दिवस)

डॉ. बी.आर. अंबेडकर थे, सामाजिक क्रांति के योद्धा एवं सच्चे देशभक्त

डॉ. बीआर अंबेडकर सामाजिक क्रांति के योद्धा एवं सच्चे देशभक्त थे। 6 दिसंबर 1956 को प्रात: ऊनके निधन का समाचार जंगल में आग की तरह फैल गया। ऑल इंडिया रेडियो ने इस समाचार को कई बार दोहराया। संसद सत्र चल रहा था। डॉ. बीआर अंबेडकर राज्य सभा के सदस्य थे, उनकी मृत्यु की सूचना मिलते ही राज्यसभा की कार्यवाही स्थगित हो गई थी।

लोकसभा में प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने डॉ. बीआर अंबेडकर के निधन का समाचार सुनकर संसद में भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि डॉ. अंबेडकर ने न केवल भारत का संविधान बनाने में कठिन परिश्रम किया, बल्कि शताब्दियों से पीड़ित एवं शोषित जनसमूह के उद्धार के लिए कड़ा संघर्ष किया। वे सामाजिक क्रांति के योद्धा एवं सच्चे देशभक्त थे।

डॉ. बीआर अम्बेडकर का निधन दिल्ली 26 अलीपुर रोड स्थित उनके आवास गृह में 6 दिसंबर 1956 को 65 वर्ष की उम्र में हुआ था। दिल्ली से राजगृह मुंबई उनकी पार्थिव देह ले जाने की व्यवस्था उनके राजनीतिक प्रतिद्वंदी मुंबई निवासी सांसद कजरोलकर के प्रयास से प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के निर्देश पर उड्डयन मंत्री बाबू जगजीवन राम ने डिकोटा हवाई जहाज से की थी।

7 दिसंबर को सुबह 3 बजे मुंबई के सांताकुज एयरपोर्ट पर शव के साथ एरोप्लेन पहुंचा था। डॉ. अंबेडकर के पार्थिव शरीर को दादर स्थित उनके निवास राजगृह में लाया गया था। मुंबई पूरा शहर शोक में डूबा हुआ था। दोपहर 2 बजे शव यात्रा राजगृह से शुरू होकर शिवाजी पार्क दादर श्मशान भूमि पहुंची। शव यात्रा में लाखों जनसैलाब उमड़ा था।

डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर का अंतिम संस्कार बुद्ध रीति से बौद्ध विद्वान डॉ. भदंत आनंद कौसल्यायन ने किया था। इस अंतिम संस्कार में भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू डॉ. अंबेडकर के

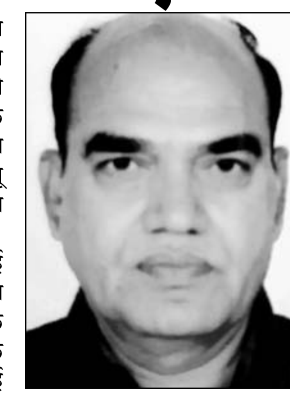

पन्नालाल मेघवाल

सुख-दु:ख के साथी नानकचंद रतु एवं महान विद्वान सोहनलाल शास्त्री प्रमुख रूप से उपस्थित थे। मुंबई दादर चौपाटी में अंतिम संस्कार की यह पवित्र भूमि अब चैत्य भूमि के नाम से दुनिया में जानी जाती है।

जहां प्रतिवर्ष 6 दिसंबर को डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने लाखों अनुयाई वहां पहुंचते हैं। क्यों याद करते हैं क्यों लाखों लोग उनकी समाधि चैत्य भूमि में जाकर अपना माथा टेकते हैं वह इसलिए क्यों कि उस महामानव डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर ने अछूतों को जानवर की जिंदगी से निकाल कर इंसानियत की जिंदगी, मान सम्मान और स्वाभिमान से जीने का हक दिलाया था।

उन्हें शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार नहीं था, संपत्ति रखने का अधिकार नहीं था। उन्हें स्वाभिमान से जीने का भी हक नहीं था। पशुओं की पूजा की जाती थी, परंतु उन्हें छूना पाप समझा जाता था। गरीब, दलित एवं पिछड़े छुआछूत एवं भेदभाव के शिकार थे।

दलितों को पानी पीने की आजादी नहीं थी। इसके लिए डॉ, बाबासाहेब आंबेडकर को महाड सत्याग्रह करना पड़ा था। महाड़ चवदार तालाब के पानी को कुत्ते बिल्ली पी सकते थे, लेकिन दलित नहीं पी सकते थे। वे यह बताना चाहते थे कि स्वर्ण उन्हें कुत्ते-बिल्ली से भी बदत्तर समझते थे।

डॉ.भीमराव अंबेडकर की अगुवाई में 20 मार्च 1927 को महाड स्थान पर दलितों को सार्वजनिक चवदार तालाब से पानी पीने और इस्तेमाल करने का अधिकार दिलाने के लिए सत्याग्रह किया। आज उसी तालाब के बीचों-बीच डॉ. बाबा साहब अंबेडकर की आदमकद प्रतिमा स्थापित है।

डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर के महापरिनिर्वाण दिवस पर अंबेडकरवादियों को चाहिए कि शरीर में खून की अंतिम बूंद तक संविधान की रक्षा करने की प्रतिज्ञा करें। वे सामाजिक क्रांति के योद्धा के साथ धम्म क्रांति के योद्धा भी थे। वे सच्चे देशभक्त थे। ऐसे क्रांतिकारी युग प्रवर्तक क्रांतिसूर्य डॉ. बाबा साहब अंबेडकर को उनके परिनिर्वाण दिवस पर पूरा राष्ट्र नमन एवं भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

पन्नालाल मेघवाल,
वरिष्ठ लेखक एवं
स्वतंत्र पत्रकार

गहलोत के अनुसार पायलट का मुख्यमंत्री बनने का समय आ चुका है!

राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को सक्रिय राजनीति में 45 साल हो चुके हैं। साल 1980 से लेकर अब तक 1989 को छोड़कर वह सिर्फ जीतते ही रहे हैं। वह पहली बार 1977 के चुनाव में हारे थे। अशोक गहलोत पांच बार सांसद रहे और 1999 से अब तक पांच बार विधायक रह चुके हैं। इसके अलावा अशोक गहलोत केंद्र में राज्यमंत्री, प्रदेशाध्यक्ष, राष्ट्रीय महामंत्री और तीन बार मुख्यमंत्री रह चुके हैं। संयोग की बात यह है कि उनके सबसे बड़े राजनीतिक दुश्मन सचिन पायलट की उम्र भी 45 साल है। अर्थात, अशोक गहलोत का राजनीतिक जीवन और सचिन पायलट का जीवन बराबर है, किंतु अनुभव के आधार पर अशोक गहलोत की ही मानें, तो सचिन पायलट का अब मुख्यमंत्री बनने का समय आ चुका है।

असल में अशोक गहलोत कई बार कहते हैं कि सचिन पायलट की रगड़ाई नहीं हुई। गहलोत यह भी कहते हैं कि राजनीति में जो होता है, वह दिखता नहीं है और जो दिखता है, वह होता नहीं है। अशोक गहलोत जो बार-बार कहते है कि रगड़ाई होनी चाहिये। राजनीति में अशोक गहलोत की रगड़ाई का अर्थ सक्रिय राजनीतिक अनुभव से ही लगाया जाता है।

अशोक गहलोत कहते हैं कि उनके हर बयाने के मायने होते हैं। यदि उनके रगड़ाई वाले बयान के मायने को कसौटी पर कसा जाये तो गहलोत का कहने का अर्थ यही है कि सचिन पायलट को मुख्यमंत्री बनने का अभी पूर्ण राजनीतिक अनुभव नहीं है किंतु यह बात पूरी सच नहीं है। असल बात यह है कि सचिन पायलट पहली बार 2004 में दौसा से सांसद चुने गये थे, तब उनकी उम्र 27 साल थी। इसके बाद 2009 में अजमेर से चुनाव जीते और मनमोहन सिंह की सरकार में केंद्रीय मंत्री रहे। जनवरी 2014 में उनको 34 साल की उम्र में राजस्थान कांग्रेस का प्रदेशाध्यक्ष बनाया गया। इसके कुछ समय बाद मई 2014 में हुये आम चुनाव में वह मोदी लहर के कारण अजमेर से आम चुनाव हार गये और उन्होंने पूरी तरह से राजस्थान पर ध्यान केंद्रित कर दिया। वसुंधरा राजे की भाजपा सरकार के समय 2014 से 2018 तक उनकी खूब सियासी रगड़ाई हुई। पुलिस के लठ खाते सचिन पायलट के गूगल पर मौजूद फोटो इसकी गवाही दे देते हैं।

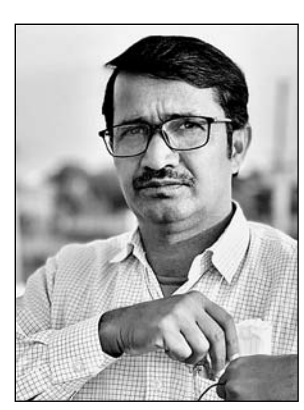

रामगोपाल जाट

दिसंबर में 2018 के विधानसभा चुनाव के समय पूरे प्रदेश और कांग्रेस के कार्यकर्ताओं को भी लग रहा था कि पार्टी को बहुमत मिला तो सचिन पायलट ही राजस्थान के मुख्यमंत्री होंगे। किंतु एक सप्ताह तक चले सियासी ड्रामे के बाद सोनिया गांधी ने वीटो कर अशोक गहलोत को तीसरी बार मुख्यमंत्री बना दिया। सचिन पायलट को उपमुख्मयंत्री बनाया गया। यह भी कहा जाता है कि अशोक गहलोत को इसी शर्त पर मुख्यमंत्री बनाया गया था कि मई 2019 के आम चुनाव में वह राज्य की 25 में से कम से 15 सीटें कांग्रेस के खाते में लायेंगे, लेकिन हुआ इसके बिलकुल उलट। ना केवल कांग्रेस लगातार दूसरी बार सभी 25 सीटें हार गई, बल्कि खुद मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के बेटे वैभव गहलोत भी गजेंद्र सिंह शेखावत के सामने जोधपुर लोकसभा सीट पर करीब पौने तीन लाख वोटों से बुरी तरह हार गये।

कहते हैं कि इसके बाद सचिन पायलट ने कांग्रेस आलाकमान को अपना वादा याद दिलाया कि लोकसभा में सीटें नहीं जीतने पर अशोक गहलोत को मुख्यमंत्री पद से हटाकर उनको सीएम बनाया जाये, किंतु दुर्भाग्य से कांग्रेस अध्यक्षा सोनिया गांधी ने उनकी सुनवाई नहीं की। इसके उलट अशोक गहलोत ने सचिन पायलट को प्रदेशाध्यक्ष की कुर्सी से हटाने के लिये सत्ता और संगठन में अंदरुनी अभियान शुरू कर दिया। यह भी कहा जाता है कि सचिन पायलट और उनके गुट के माने जाने वाले मंत्रियों, विश्वेंद्र सिंह और रमेश मीणा के विभागों की फाइल्स भी सीएमओ, सीएमआर से ही अप्रूव होती थीं। ऐसा करके अशोक गहलोत की सरकार ने इन मंत्रियों को अपमानित करने का रास्ता चुना। यह भी ध्यान रखने

■ पायलट को सीएम नहीं बनाया गया तो हो सकता है मई 2024 के चुनाव से पहले वह भी पार्टी छोड़ जायें

योग्य है कि पंचायती राज मंत्री रहते हुये सचिन पायलट की अगुवाई में राज्य का पंचायती राज विभाग पूरे देश में एक नंबर पर आ चुका था। बावजूद इसके अपने मंत्रियों पर लगातार बढ़ते दबाव के चलते अंतत: सचिन पायलट गुट ने 13 जुलाई 2020 को अशोक गहलोत सरकार से बगावत कर दी। पायलट अपने साथियों के साथ मानेसर में चले गये तो गहलोत की सरकार पहले 15 दिन तक जयपुर की कथित वैभव गहलोत वाली होटल में और उसके बाद इतने ही दिनों तक जैसलमेर की एक बजरी माफिया की होटल में कैद रही।

बाद में प्रियंका गांधी वाड्रा ने बीच बचाव कर दोनों में एक समझौता करवाया, जिसके अनुसार जल्द ही सचिन पायलट की मांगों को स्वीकार करना था। मतलब यही कि उनको मुख्यमंत्री बनाना था, लेकिन कहा जाता है कि राजस्थान में रॉबर्ट वाड्रा के कथित जमीन घोटाले में गांधी परिवार के दामाद की गिरफ्तारी से बचने के लिये सोनिया गांधी ने अशोक गहलोत को मुख्यमंत्री के रुप में आगे भी स्वीकार करने का निर्णय लिया। इस मामले को सवा दो साल हो चुके हैं। कांग्रेस के लोग कहते हैं कि सचिन पायलट को हर दो चार माह में एक नया आश्वासन देकर दिल्ली से जयपुर भेज दिया जाता है किंतु आज तक उनकी मांगें पूरी नहीं की गई हैं। पिछले महीने की 25 तारीख को जयपुर में अशोक गहलोत के मंत्रियों द्वारा कांग्रेस आलाकमान के साथ जो बगावत की गई, वह अक्षम्य थी। जिसकी रिपोर्ट भी अजय माकन और मल्लिकार्जुन खड़गे ने सोनिया गांधी को सौंप दी। हालांकि, उस रिपोर्ट पर निर्णय नहीं हुआ है, किंतु खड़गे के अध्यक्ष बनने के बाद उस पर फैसला होने की उम्मीद जताई जा रही है।

खड़गे के अध्यक्षीय शपथ ग्रहण समारोह में शामिल हुये अशोक गहलोत ने पत्रकारों से बात करते हुये जो बातें कहीं, उससे साफ हो जाता है कि उनकी प्रतिबद्धता केवल गांधी परिवार के प्रति है। जबकि उनके हाव-भाव पर गौर किया जाये तो यह भी स्पष्ट हो जाता है कि खड़गे के अध्यक्ष बनने से अशोक गहलोत खास प्रसन्न नहीं हैं। वह अब भी राहुल गांधी को अध्यक्ष बनाये जाने की रट लगाये बैठै हैं। अशोक गहलोत के हाव-भाव से भी प्रतीत होता है कि शायद उनकी कुर्सी निकट ही छीनी जा सकती है। दूसरी तरफ सचिन पायलट पूरी से तरह शांत हैं और सत्ता रिपीट कराने पर ध्यान देने की बातें कह रहे हैं। इसका अर्थ यही है कि कांग्रेस में जल्द ही एक और सियासी तूफान उठने वाला है, जिससे पहले की शांति सचिन पायलट खेमे में देखी जा सकती है।

अब सरकार को एक साल का समय बचा है, लेकिन उससे भी ज्यादा जरुरी बात यह है कि सचिन पायलट का राजनीतिक अनुभव अब उतना ही हो गया है, जितना अशोक गहलोत का साल 1998 में मुख्यमंत्री बनने के समय था। यानी अशोक गहलोत के बयानों को ही कसौटी पर कसा जाये तो सचिन पायलट का अब मुख्यमंत्री बनने का समय आ चुका है। क्योंकि जब अशोक गहलोत पहली बार मुख्यमंत्री बने थे, तब उनका अनुभव 18 साल का था और अब सचिन पायलट का राजनीतिक अनुभव भी 18 साल हो चुका है। इसलिये अशोक गहलोत के रगड़ाई वाले बयान की पूर्ति सचिन पायलट के सियासी अनुभव से हो जाती है किंतु हो सकता है कि अब अशोक गहलोत अपने बयान से फिर मुकर जायें और कोई नया सिगुफा लेकर सामने आ जायें। इसकी प्रबल संभावना भी है और अशोक गहलोत से हमेशा इसकी उम्मीद भी की जाती है।

एक बात राजनीति के जानकारों को साफ दिखाई दे रही है, यदि सचिन पायलट को मुख्यमंत्री नहीं बनाया गया, तो केवल कांग्रेस की सत्ता रिपीट होना लगभग नामुनकिन है, बल्कि आगे सचिन पायलट भी कांग्रेस में रहेंगे, इस पर भी संदेश उत्पन्न हो रहा है। कुछ लोगों का यह मानना है कि इस कार्यकाल में सचिन पायलट को सीएम नहीं बनाया गया तो हो सकता है मई 2024 के चुनाव से पहले वह भी पार्टी छोड़ जायें। अन्यथा उनको कांग्रेस से मुख्यमंत्री बनने के लिये कम से कम पांच साल इंतजार करना होगा, जो शायद उन्हें मंजूर ना हो।

रामगोपाल जाट,
वरिष्ठ पत्रकार

मासलपुर क्षेत्र में टाइगर का मूवमेंट,गाय का शिकार किया

मासलपुर / करौली, (निसं)। डांग क्षेत्र में रविवार को महुआ खेड़ा नाका के अंतर्गत गोढेर वन क्षेत्र में एक बार फिर टाइगर के पैरों के निशान मिलने से लोगों में दहशत है। जयपुर स्थित वन विभाग के पगमार्क विशेषज्ञ द्वारा भेजे गए स्कैट के नमूनों का विश्लेषण करने के बाद टाईगर 132 के होने की पुष्टि की है। जिसने एक गाय का भी शिकार किया है। दूसरे दिन सोमवार को गोढेर वन क्षेत्र में ग्रामीणो ने टाईगर को देखा मगर वन विभाग के अधिकारियो ने पुष्टि नही की।

मासलपुर क्षेत्र के खेडा गांव के समीप के जंगलों में टाईगर के विचरण करना पाया गया। जहां उनके पगमार्क मिले हैं। रविवार को धौलपुर जिले की सीमा के पास जंगलों में पगमार्क मिले हैं। क्षेत्र में दो दिन से विचरण करने वाले टाइगर द्वारा एक गाय का शिकार भी किया है। जंगल में मृत गाय के अवशेष मिले हैं। टाईगर के मूवमेंट की खबर के बाद वन विभाग अलर्ट हुआ है। उसने टाईगर के मूवमेंट वाले इलाके में निगरानी बढ़ा दी है। टाइगर के मूवमेंट की सूचना पर वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची और मौका मुआयना किया। क्षेत्रीय वन अधिकारी रमेश चंद्र मीणा ने बताया कि इलाके में टाइगर के पैरों के निशान मिले हैं। टाइगर को ट्रैक करने के प्रयास किए जा रहे हैं। वन विभाग की टीमें लगातार टाइगर के मूवमेंट पर नजर बनाए हुए हैं एवं लोगों से सचेत रहने की अपील की गई है। इसके साथ ही क्षेत्रिय वन अधिकारी ने कहा की रविवार को टाईगर के वन क्षेत्र मे आने के पगमार्क लिये गये लेकिन सोमवार को टीम को कही मगमार्क नही मिले। हालाकि ग्रामीण टाईगर के इसी क्षेत्र में देखने की बात कह रहे हैं।

राशिफल मंगलवार 6 दिसम्बर, 2022

पंडित अनिल शर्मा

मार्गशीष मास, शुक्ल पक्ष, चतुरदशी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2079, भरणी नक्षत्र प्रात: 8:38 तक, शिव योग रात्रि 2:52 तक, कौलव करण सांय 6:23 तक, चन्द्रमा आज दिन 3:03 से वृष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृश्चिक, चन्द्रमा-मेष, मंगल-वृष, बुध-धनु, गुरू-मीन, शुक्र-धनु, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग और रवियोग प्रात: 8:38 से आरम्भ होगा। आज त्रिपुर भैरव जयन्ती, संभवनाथ जयन्ती, कृत्तिका रिषभ और भण्डा दिवस है।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:42 से 11:00 तक, लाभ-अमृत 11:00 से 1:35 तक, शुभ 2:53 से 4:11 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 7:07, सूर्यास्त 5:29

मेष
अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आज प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। पारिवारिक कार्यों के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है।

सिंह
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

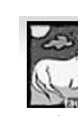

वृष
मित्रों/रिश्तेदारों के कारण भागदौड़ रहेगी और अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। दिन के मध्यान्ह पश्चात मानसिक तनाव और भागदौड़ से राहत मिलेगी। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

कन्या
आर्थिक मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। संभावित धन प्राप्ति में विलम्ब हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। दिन के मध्यान्ह पश्चात परिवार में शुभ-धार्मिक-मांगलिक संदेश प्राप्त हो सकते हैं।

मकर
घर-परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है।

मिथुन
आर्थिक/वित्तीय मामलों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

तुला
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। दिन के मध्यान्ह पश्चात यात्रा टालना ठीक रहेगा।

कुंभ
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी।

वृश्चिक
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

मीन
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। व्यावसायिक कार्यों पर नियंत्रण बना रहेगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।